फ़िल्म ईज़ीन
जनवरी 2025, अंक 01, वर्ष -02

सिनेमाहौल

संकलन और संपादन
अजय ब्रह्मात्मज

आवरण: आर बर्की

cinemahaul

अजीत राय, अनीता नेगी, अनुज खरे, अवशेष चौहान, डॉ प्रकाश हिन्दुस्तानी, डॉ रक्षा गीता, फ़रीद ख़ाँ, झरना, मनोरमा सिंह, पूरन जोशी, माया मिश्रा, सुदीप सोहनी, सुधाकर नीलमणि, सूर्यन मौर्य, विमल चंद्र पाण्डेय, विनोद विप्लव, यूनुस ख़ान

2024 पलट कर

जनवरी, 2025

अंक 13

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संपादक:

अजय ब्रह्मात्मज

कवर डिज़ाइन: रविराज पटेल

अनुक्रम

मेरी बात 4

आल वी इमैजिन ऐज लाइट 6

अजित राय

लापता लेडीज 12

अनीता नेगी

हिन्दी फिल्म वालों ने सीखना बंद कर दिया है 29

डॉ. प्रकाश हिन्दुस्तानी

क्षेत्रीय सिनेमा का विस्तार: ओटीटी प्लेटफार्म 34

डॉ. रक्षा गीता

झीनी बीनी चदरिया 50

फ़रीद ख़ाँ

दिलों को लुभा रहा दक्षिण भारतीय सिनेमा 55

झरना

CTRL और मेयाझगन 64

मनोरमा सिंह

शॉर्ट फिल्मों की व्यापक दुनिया 72

माया मिश्रा

मैरी क्रिसमस 83

पूरण जोशी

ऑल वी इमैजिन एज़ लाइट 87

सुदीप सोहनी

अब तो सब भगवान भरोसे फिल्म के अनुभव 97

सुधाकर नीलमणि

बीता साल और भारतीय सिनेमा 102

सूर्यन मौर्य

भोजपुरी में साई फाई : के देखी मरदवा 115

विमल चंद्र पाण्डेय

मोहम्मद रफ़ी की जन्मशती : भारतीय संगीत के स्वर्णिम युग की आवाज़ 121

विनोद विप्लव

2024: कुछ नये और कुछ पुराने का करामाती साल 128

यूनुस ख़ान

कार्तिक आर्यन 137

अजय ब्रह्मात्मज

बेतरतीब Bollywood 142

मेरी बात

दो महीनों के अंतराल के बाद सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन का ताजा अंक लेकर हम आ गए हैं। जनवरी 2025 से हमलोग दूसरे साल में प्रवेश कर रहे हैं। डिजिटल ईज़ीन के लिए यह किसी उपलब्धि से कम नहीं है। यह उपलब्धि हमारे लेखकों और पाठकों के सहयोग के बगैर मुमकिन ही नहीं हो पाती। मैं यहां अपने स्थायी सहयोगी नॉटनल के नीलाभ श्रीवास्तव और गरिमा सिन्हा का उल्लेख नहीं कर रहा हूं।

पहले भी मैं बता चुका हूं कि सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन एक प्रयास है फिल्मों पर नियमित टिप्पणी, लेख और विश्लेषण लेकर आने का। यहां समकालीन फिल्मों के साथ अतीत की फिल्मों की भी चर्चा होती है। हम प्रवृत्तियों पर बातें करते हैं। साथ ही यह भी देखने की कोशिश करते हैं कि हिंदी फिल्में किस दिशा में आगे की ओर जा रही है। यानी भविष्य की चिंता भी हमारे मानस में रहती है।

2024 भारतीय सिनेमा के लिए कारोबार और व्यापार के हिसाब से तो ठीक ही रहा, लेकिन कंटेंट के मामले में हम कहीं पिछड़ते नजर आए। अच्छी संख्या में बॉयोपिक और सीक्वल फ़िल्में प्रदर्शित हुईं। इन दिनों यह धारणा सी बनती जा रही है कि जिस फिल्म ने अधिक कमाई की है, वह अच्छी भी होगी। ऐसा हमेशा नहीं होता है। ज्यादातर मामलों में हम देखते हैं कि फिल्में औसत से कमतर होती है, लेकिन उनकी कमाई कई बार बेहतर हो

जाती है। कमाई और बेहतर के इस फर्क को हम अपने लेखों के जरिए बताने की कोशिश करते हैं।

इस बार का अंक '2024 पलट कर' है। लेखकों ने यह देखने और समझने की कोशिश की है कि 2024 कैसा गुजरा सिनेमा के हिसाब से।

उम्मीद है पूरे साल आपका साथ बना रहेगा। आपकी टिप्पणियां और सलाह मिलती रहेंगी।

फ़िल्में देखें, फ़िल्में पढ़ें और फ़िल्मों पर लिखें

अजय ब्रह्मात्मज

25 जनवरी 2025